तृतीय अध्याय

नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों के पात्रों का अनुशीलन

''नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों के पात्रों का अनुशीलन''

प्रस्तावना -

पात्र और चरित्र-चित्रण नाटक के शिल्प-विधान का महत्त्वपूर्ण पक्ष है, क्योंकि बिना पात्रों के नाटक की रचना ही संभव नहीं है। पात्रों के माध्यम से ही नाटक की कथावस्तु का विकास होता है और नाटककार का जीवन विषयक दृष्टिकोण भी पात्रों के माध्यम से ही स्पष्ट होता है। नाटक 'संवादात्मक गद्‌य विधा' है और संवादों के लिए भी पात्रों की ही आवश्यकता होती है। वस्तुतः पात्र ही वह मूल तत्व है, जो नाटक को 'नाटक' संज्ञा के काबिल बनाता है। डॉ. रामशंकर त्रिपाठी के अनुसार 'पात्र' से तात्पर्य है- ''काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि में वे व्यक्ति जो तंत्रविष्ट कथावस्तु की घटनाओं के घटक होते हैं और जिनके क्रिया-कलाप या चरित्र से कथावस्तु की सृष्टि या पारिपाक होता है। नाटक में वे अभिनेता या नट जो उक्त व्यक्तियों का वेशभूषा आदि के माध्यम से रूप धारण करके उनके चरित्रों का अभिनय करते हैं, 'पात्र' कहलाते हैं।''[1] संक्षेप में नाटक पात्रों के लिए ही बनता है, यह कहना उचित होगा। नाटक दर्शक या पाठक तक कोई भी विचार पहुँचाने का सशक्त माध्यम है और पात्र उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण जरूरत है।

नरेंद्र कोहली के नाटकों में जीवन की विषमताओं और विसंगतियों के चित्रण द्‌वारा मानव नियति की त्रासदी उभारने पर पात्र और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से ये नाटक पूर्ववर्ती नाटकों से भिन्न हैं। 'शम्बूक की हत्या' मिथकीय नाटक होने के कारण इसमें प्राचीन और आधुनिक दोनों आयामों को जोड़ने की कोशीश रही है। 'हत्यारे' नाटक में पात्रों के चरित्र से त्रासदी स्पष्ट होती है। प्रारंभ से अंत तक यह त्रासदी लगातार मंच पर रहती है। 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में आवश्यकतानुसार और आकर्षक पात्र योजना रही है। यह नाटक नए तंत्र के द्‌वारा नई कथा का विषय पाठकों तक पहुँचाने की सामर्थ्य रखते हैं। पात्रों की भाषा बड़ी ही आकर्षक है। नरेंद्र कोहली के नाटकों में हर पात्र की रचना बड़ी सावधानी से की है। उचित वातावरण तथा प्रसंगों में पात्र को चित्रित करने में आप सफल रहे हैं। इस अध्याय में उनके आलोच्य नाटकों के पात्रों का संक्षेप में चरित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

3.1 शम्बूक की हत्या -

'शम्बूक की हत्या' नाटक में नरेंद्र कोहली ने प्राचीन और आधुनिक दो समांतर कथाबीजों को बिंब-प्रतिबिंब के रूप में साकार किया है, इसलिए इस नाटक के पात्र पौराणिक और आधुनिक हैं। नाटक के पौराणिक पात्रों में विश्वामित्र, परशुराम, दशरथ आदि पात्र हैं। आधुनिक पात्रों में ब्राह्मण, क्लर्क, क्रांतिबाबू, सब-इन्स्पेक्टर, कांस्टेबल, चपरासी, सैनिक आदि पात्र हैं। इस नाटक में नाटककार ने पात्रों की वेशभूषा के बारे में संकेत कुछ मात्रा में दिए हैं, लेकिन उनका व्यक्तित्व ही उनकी वेशभूषा का संकेत करता है। पात्रों के भावों के बारे में नाटककार ने जगह-जगह जानकारी जरूर दी है।

इस नाटक में पात्रों की भरमार रही है फिर भी हर पात्र अपनी जगह पर महत्त्वपूर्ण लगता है। रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए कम लोगों या पात्रों को लेकर इसे प्रस्तुत किया जा सकता है। जिस पात्र के प्रस्तुतिकरण में अंतर हो उनको दोहरी भूमिकाएँ देकर पात्रों की संख्या कम की जा सकती है। जैसे की एक पात्र कांस्टेबल और क्लर्क, चपरासी, चपरासी 1, 3 के रूप में, एक पात्र विशिष्ट सैनिक और क्रांतिबाबू, चपरासी 2, 4 के रूप में, एक पात्र विश्वामित्र और परशुराम, चपरासी 5 के रूप में, एक पात्र हेड कांस्टेबल, व्यक्ति और सब-इन्स्पेक्टर के रूप में इस तरह से नाटक पाँच या छः लोगों को लेकर खेला जा सकता है। ये काटछाट रंगमंच के दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। असल में चारित्रिक तथा कथावस्तु के विकास के लिए सभी पात्र नाटक में आवश्यक हैं। इस नाटक में पात्रों का साधारणीकरण मिलता है।

3.1.1 आधुनिक और मुख्य पात्र के रूप में -

3.1.1.1 ब्राह्मण -

'शम्बूक की हत्या' नाटक का प्रमुख पात्र ब्राह्मण एक अभावग्रस्त व्यक्ति के रूप में महत्त्वपूर्ण पात्र है। अभावग्रस्तता में अपने बेटे की हुई मृत्यु उसे दुःख पहुँचाती है। ब्राह्मण अपने बाहों में बेटे का शव लेकर दिल्ली की सड़क पर निकल पड़ा है। नाटककार ने ब्राह्मण को भारत की सौ करोड़ जनता के रूप में चित्रित किया है। नाटक की प्रस्तावना में ब्राह्मण के बाह्य व्यक्तित्व के बारे में नाटककार ने जानकारी दी है। रंगमंच पर ब्राह्मण का प्रवेश होता है तो वह जन्म, कर्म, आचार-विचार, आस्था और पहनने-ओढ़ने से पूरी तरह ब्राह्मण लगता है। ब्राह्मण सड़कों पर

चल रहा है तो बिना किसी को पहचाने का अभिनय करता है। ब्राह्मण का चेहरा एकदम भावशून्य, पत्थर के समान सपाट, वैसा सपाट जैसा जबड़ों की भींच लेने से एक आम चेहरा हो जाता है। उसकी आँखें शून्य में घूर रही हैं, जड़ बनाए हुई हैं। ब्राह्मण का चरित्र-चित्रण करते समय नाटककार ने ब्राह्मण के महत्त्वपूर्ण संवादों के समय उसके बाह्य वर्णन के और अभिनय के संकेत दिए हैं। जैसे- ब्राह्मण की दृष्टि शुष्क रेगिस्तानी दृष्टि से घूरता है, उसकी वाणी में भावशून्यता, तटस्थता, ठंड़ापन है। ब्राह्मण का स्वर कभी दृढ़, उग्र, दीन, शांत होता है। ब्राह्मण का व्यक्तित्व शांत, नाराजगीपूर्ण, गंभीर, दुःखी, अत्यंत आहत, उत्साह, शून्य, भयभीत के रूप में स्पष्ट होता है। ब्राह्मण द्वारा खुद की पहचान करते हुए कहता है- ''मैं एक ईमानदार, धार्मिक ब्राह्मण हूँ और साधारण ईमानदार जनता से अड़ने रावण जैसा राक्षस भी नष्ट हो जाता है। इसलिए मुझसे अड़ो मत। ....वैसे इस समय मेरी भुजाओं में मेरे एकमात्र बेटे का शव है। मुझे छुओ मत, जाने दो।''[2] इस तरह ब्राह्मण अपनी पहचान बड़ी आकर्षकता से कराता है।

ब्राह्मण की बाह्य व्यक्तित्व की झलक उसके संवादों से स्पष्ट होती है। इन संवादों से ब्राह्मण के अंतरिक मानसिक आवेग भी स्पष्ट होते हैं। ब्राह्मण के बेटे का शव देखकर जब विशिष्ट सैनिक उसे प्रजेन्ट मानता है, तब ब्राह्मण अपनी विदग्ध प्रतिक्रिया स्पष्ट करते हुए कहता है- ''यह मेरे एकमात्र बेटे का शव है।''[3] इसमें ब्राह्मण की मानसिक स्थिति स्पष्ट होती है। नाटक में ब्राह्मण अपने इकलौते बेटे की अकाल मृत्यु से त्रस्त दिखाई देता है। नाटककार ने ब्राह्मण की आंतरिक स्थिति को क्लर्क द्वारा पूछे प्रश्नों से स्पष्ट किया है। ब्राह्मण इससे तंग आकर वास्तविकता पर व्यंग्य करके अपने दुःख को स्पष्ट करते हुए कहता है- ''इसकी आयु बारह वर्ष की थी। मैं पूछता हूँ कि यह इस अल्पायु में मर गया और मैं इसका बाप होकर भी जीवित क्यों हूँ।''[4] इस प्रकार ब्राह्मण राजनीतिक प्रशासन पर व्यंग्य करता है। ब्राह्मण सरकारी व्यवस्था से त्रस्त दिखाई देता है। ब्राह्मण की त्रासदी सब-इन्स्पेक्टर के सामने अपने बेटे की मृत्यु के पश्चात मानसिकता का ढलना उसके संवादों से स्पष्ट होता है कि ''मैं तो कब से कह रहा हूँ कि शासन के पाप में मेरे पुत्र की हत्या हुई है। शासन शम्बूक का वध कर उसका प्रायश्चित करे।''[5] ब्राह्मण अकाल से बेटे की मृत्यु होने से मानसिक संतुलन खो बैठा है। ब्राह्मण बेटे की मृत्यु हत्या मानता है तो क्लर्क इसे प्राकृतिक मानता है तब ब्राह्मण उस पर गुस्सा होकर बार-बार 'शासन के पाप' के

कारण बेटे की बालमृत्यु हुई है। इस मानसिकता में ब्राह्मण नाटक में सरकारी व्यवस्था, शासन पर आरोप करके उनका पर्दाफाश करता है। नाटककार ने पूरे नाटक में ब्राह्मण के दुःख, पीड़ा, त्रासदी, शोषण, अत्याचार के कारण बेटे की अकाल मृत्यु आदि को उकेरकर ब्राह्मण के मानसिक भावनाओं को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है।

संक्षेप में यह कहना उचित होगा कि नाटककार ने ब्राह्मण द्वारा आदर्श राज्य की कल्पना को पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है। ब्राह्मण आधुनिक कालखंड का अभावग्रस्त व्यक्ति है, अकालपीड़ा की त्रासदी के रूप में उसके बेटे की मृत्यु हुई है, इस मृत्यु के लिए वह शासन को जिम्मेदार ठहराता हुआ अपनी शिकायत लेकर बेटे के शव के साथ उपस्थित होता है। यहाँ शासन की अभावग्रस्तों की ओर अदम्य दुर्लक्ष्य की नीति पर प्रकाश पड़ता है। ब्राह्मण राजनीति पर व्यंग्य करके शासनप्रणाली की कमियों को लोगों के सामने प्रस्तुत करता है। यह ब्राह्नण शासन पर अंकूश लगानेवाला एक कर्तव्यदक्ष पात्र लगता है, जो समय-समय पर शासन की कमियों की पोल खोलता है।

3.1.1.2 **क्लर्क -**

नाटककार नरेंद्र कोहली ने क्लर्क को राजनीतिक शासक का प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। क्लर्क प्रारंभ में नाटक में 'व्यक्ति' नाम से प्रविष्ठ होता है और अपने को राष्ट्रपति का खास नौकर मानता है। क्लर्क ब्राह्मण के सामने अपनी पहचान देते हुए कहता है- ''मैं त्रेता में राम हूँ, द्वापर में कृष्ण हूँ और आजकल एक क्लर्क हूँ।''[6] क्लर्क के बाह्य व्यक्तित्व के संकेत नाटककार ने नाटक में नहीं दिए, लेकिन संवादों के आधार पर सरकार क्लर्क के व्यक्तित्व की झलक कुछ मात्रा में आँखों के सामने आती है। क्लर्क द्वारा अपने अधिकारों की बढ़ौती स्पष्ट करते समय आजकल पूरे देश में क्लर्क तंत्र है। साथ ही शासन इन्हीं के हाथों में है फिर भी क्लर्क खुद को गरीब मानता है। क्लर्क द्वारा प्रस्तुत किए गए विचारों, संवादों को सुनकर उसके बाह्य व्यक्तित्व का पता चलता है। वास्तवकि रूप में क्लर्क शासन का एक सामान्य सेवक है। क्लर्क के भाव, मानसिक आवेग, उसका चेहरा दिखने में गरीब, शांत, निरागस, विनोदी, हसतमुख लगता है। क्लर्क के वेशभूषा, रहने का ढंग, दूसरों के साथ बर्ताव का तरीका आदि महत्त्वपूर्ण जानकारी हमें अंदाज के तौर पर ढूँढ़नी पड़ती है।

क्लर्क नाटक में समाज, राजनीति, शासक, जनता, शोषण, अत्याचार, महँगाई, शिक्षाव्यवस्था, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी आदि का सुंदरतम चित्र खींचकर उनके सोचने का ढंग, विचार क्षमता, स्वभाव, गुण-दोषों की झलक दिखाने का प्रयास करता है। नाटककार ने क्लर्क को शासक वर्ग का प्रतीक बनाकर जनता पर अधिकार जताकर वह किसी भी घटना, व्यक्तियों से डरता नहीं है। क्लर्क ब्राह्मण के विचारों से गुस्सा न होकर सौम्य विनोदी शैली से सरकार के विचारों, मतों को स्पष्ट करता है। क्लर्क अपने अधिकार की कक्षा का महत्त्व अधिकारियों की नियुक्ति के संदर्भ जानकारी देकर ब्राह्मण के सामने महत्त्व बढ़ाकर अपने आप को ऊँचे स्थान पर पहुँचाता है। क्लर्क रिश्वत लेने के पक्ष में है, क्योंकि- "रिश्वत तो शराब है, जिससे प्यास बढ़ती है, तृप्ति उससे कभी नहीं होती।"[7] यहाँ क्लर्क का रिश्वतखोरी स्वभाव की झलक दिखाई देती है। क्लर्क जनता की भाषा पर नेताओं द्वारा होनेवाले अत्याचार पर अपने विचार स्पष्ट करता है कि नेताओं को अपनी रोटी छिनने के डर के कारण भाषा का विकास रोकते हैं। क्लर्क ब्राह्मण के विचारों, बहस से तंग आकर बीड़ी निकालता तो ब्राह्मण कार्यालय में बीड़ी पिना अनुचित बताने पर क्लर्क बीड़ी को नीचे फेंकता जिससे टाट का तुकड़ा जलता है। क्लर्क ब्राह्मण का गुस्सा देखकर अपना उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहता है कि पुराना टाट जलेगा तो नया खरीदेंगे ताकि टाट के कारखानों और मजदूरों को काम मिलेगा। गंदगी फैलने से सफाई कामगारों को काम मिलेगा। यहाँ नाटककार ने क्लर्क भ्रष्टाचारी, नालायक व्यक्तित्ववाला होकर भी कुछ गुण अच्छे भी हैं यह स्पष्ट किया है। क्लर्क ब्राह्मण के बेटे की मृत्यु प्राकृतिक मानता है, जो पिछले कर्मों का फल है। क्लर्क देश में बढ़नेवाली मँहगाई को देश की प्रगति, विकास मानता है। नाटककार ने पूरे नाटक में क्लर्क ही देश का शासनकर्ता है यह अनेक उदाहरणों से स्पष्ट किया है।

संक्षेप में शिक्षा व्यवस्था, महाविद्यालय द्वारा जनता को भ्रमजाल में अटकाकर युवा पीढ़ी का जीवन पाँच सालों तक टक्करें मारते रहता है। क्लर्क सब-इन्स्पेक्टर की खोज से तंग आकर उन्हें अत्याचारी कहता है। इस नाटक का क्लर्क एक चतुर व्यक्ति के रूप में सामने आता है। वह हर बात में घूसखोरी का समर्थन करता है। ब्राह्मण जैसे देश के अभावग्रस्त व्यक्ति को डरा-धमकाकर उसे चुप करने का रवैया अपनाता है। ब्राह्मण मात्र उसकी हर बात का खंड़न

करते हुए उसे आदर्शवत बर्ताव की सीख देता है। इस क्लर्क के माध्यम से प्रशासन की भयावह घूसखोरी पर प्रकाश पड़ता है।

3.1.1.3 ***क्रांतिबाबू -***

क्रांतिबाबू आधुनिक काल में गजेटेड ऑफिसर हैं। क्लर्क क्रांतिबाबू की पहचान ब्राह्मण से करते समय कहता है- ''ये हैं क्रांतिबाबू ! बड़े पुराने क्रांतिकारी हैं। अंग्रेजों के समय इन्होंने प्रेम-विवाह कर सामाजिक क्रांति की थी, निजी उद्योग चलाकर आर्थिक क्रांति की थी और वायसराय की गाड़ी पर बम फेंककर राजनीतिक क्रांति की थी। अब इन्हें राष्ट्रीय सरकार से अभिनंदन और ताम्रपत्र मिला है।''[8] ब्राह्मण क्रांतिबाबू को परशुराम का अवतार मानता है। परशुराम ने सदा क्षत्रियों से युद्ध किया और क्रांतिबाबू क्रांति करते हैं। क्रांतिबाबू ब्राह्मण से शम्बूक की जानकारी लेकर उसे रामायण का रामलुभाया जो पुलिस था, हेरा-फेरी किए बिना कार्य करनेवाला क्लर्क, राशन दुकानदार मानकर अपनी व्यंग्य दृष्टि को स्पष्ट करता है। क्रांतिबाबू शम्बूक की हत्या का कारण गुंड़गार्दी, काला बाजार, आलस्य, हरामखोरी बताकर दूरदृष्टि से देश की विचित्र परिस्थिति का दर्शन कराके अपनी गहरी सोच को स्पष्ट करता है।

संक्षेप में क्रांतिबाबू नाटक में दार्शनिक, चिंतनशील, क्रांतिकारी, दूरदृष्टिवाले पात्र हैं जो आधुनिक और पौराणिक युग के समाज सुधारक रूप में आए हैं।

3.1.1.4 ***सब-इन्स्पेक्टर -***

नाटक में सब-इन्स्पेक्टर का प्रवेश नाटक के अंत में होता है। सब-इन्स्पेक्टर सूचना मिलने पर क्लर्क के ऑफिस आकर छान-बीन करता है। समाज के पुलिस व्यक्तित्व की सभी विशेषताएँ उसके चरित्र में समाविष्ट हैं। पुलिस का बाह्य रूप उनकी वर्दी, हाथ में डंड़ा, बड़ी मूछें, मुँह पर हमेशा क्रोध, आक्रोश की झलक, आँखें रात्रि का जागरण तथा क्रोध दोनों की सम्मिलित शक्ति से चढ़ी हुई है। सब-इन्स्पेक्टर नाटक में बहुतसी बात आँखों के द्वारा करता है। आँखों से सबकी ओर घूर-घूर कर देखता है। सब-इन्स्पेक्टर की आवाज कड़ी लेकिन वाणी गालियों से भरी है। नाटक में नाटककार ने सब-इन्स्पेक्टर के संवादों के पहले अभिनय के संकेत दिए हैं। जैसे छड़ी से धमकाना, क्लर्क को अपनी छड़ी से कोंचना, चढ़ी हुई आँखें, अकड़कर कुर्सी

पर बैठ जाना, कभी संतुष्ट कभी नाराज होना, पुलिसी आदत से मूँछ ऐठना, क्रोध, प्रसन्नता, आश्चर्य से मुँह फाड़कर देखना आदि बाह्य गुण उसमें दिखाई देते हैं।

नाटककार ने पुलिस के संवादों से गंदेपण, बेशर्मी, रिश्वतखोरी, हरामखोरी, धोकेबाजी आदि गुणों की पहचान कराई है। चपरासियों की बातें सुनकर सब-इन्स्पेक्टर द्वारा कहना- "बक-बक मत करो। सच-झूठ तुम मुझ पर छोड़ दो। रात को मैं भी जब सादे कपड़ों में स्कूटर-रिक्शा चलाता हूँ तो स्वारी का माल-वाल देखकर उसे चाकू मार देता हूँ। जरूर पुलिस ने ही मारा होगा। हमारे रहते और कौन मार सकता है।"[9] सब-इन्स्पेक्टर के इन विचारों बातों को सुनकर समाज का असली गुन्हेगार पुलिस होने के कारण उसे शिक्षा नहीं हो पाती जिससे समाज से गुन्हेगारी का नष्ट होना संभव नहीं दिखाई देता।

संक्षेप में नाटककार ने समाज में फैले रिश्वतखोरी, शोषण, अत्याचार, गुंड़ागर्दी को पुलिस व्यवस्था का प्रश्रय होने के कारण समाज युगों-युगों से इससे बाहर निकलने का प्रयास करके भी सफल नहीं होता है। नाटककार ने पुलिस व्यवस्था का व्यंग्य सब-इन्स्पेक्टर पात्र के माध्यम से किया है।

3.1.2 गौण पात्र -

3.1.2.1 कान्स्टेबल, हेड-कान्स्टेबल -

कथा में मुख्य पात्र के साथ गौण पात्र का भी महत्त्व होता है। कांन्स्टेबल पात्र द्वारा नाटक शुरू होता है। रंगमंच पर चौराहे का दृश्य है, उस पर ट्रैफिक कांस्टेबल खड़ा ट्रैफिक-संचालन कर रहा है। उसके पास हेड कान्स्टेबल खड़ा है। नाटककार ने दोनों के बाह्य व्यक्तित्व के बारे में जानकारी देते समय उनकी बाँह पर तीन फीतें चिपकाए हैं, दोनों ने वर्दी पहनी है इसका संकेत मिलता है। नाटककार ने कान्स्टेबल और हेड-कान्स्टेबल के मुँह से हर संवादों पर गालियाँ पेश करके पुलिस व्यवस्था के व्यंग्य को स्पष्ट किया है। हेड-कान्स्टेबल द्वारा ब्राह्मण पर क्रोध उतारते हुए कहा जाता है- "अबे अंधे की औलाद ! तेरी आँखें हैं कि कैलाडोडे ! सड़क तुझे दहेज में मिली है कि हटेगा ही नहीं ? अबे माँ के खसम ! अभी तेरे बाप की कार तेरा कीमा बना जाती, तो उसे हम झटकेवाली दुकान पर भेजते या हलालवाली दुकान पर ? बोल ! अबे यहाँ मीट खाने में भी सांप्रदायिकता है। समझा ? तेरे एक्सिडेंट के पीछे शहर में सांप्रदायिक दंगा हो जाता।"[10] संक्षेप

में नाटककार ने पुलिस व्यवस्था की हरकतों का व्यापक चित्रण उनकी मुँह से निकली गालियोंपूर्ण व्राणी का बौछार, शब्दों का नंगापन स्पष्ट करके किया है।

3.1.2.2 ***विशिष्ट सैनिक*** -

सशस्त्र हथियार लेकर विशिष्ट सैनिक खड़ा है। ब्राह्मण के हाथों में शव देखकर चौंककर फिर अपने को सँभालकर ब्राह्मण को रोकता है। विशिष्ट सैनिक ब्राह्मण से वार्तालाप करते समय अपने पद का रोब ब्राह्मण को दिखाते समय ब्राह्मण बौड़म, घनचक्कर, कूड़ा-कर्कट कहता है। ब्राह्मण हटने से इन्कार करने पर- ''क्यों नहीं हट सकता ? तू क्या देश की गरीबी है कि हठ नहीं सकता ?''[11] विशिष्ट सैनिक सरकारी नौकर होने के कारण अमीरों को देश में महत्त्वपूर्ण मानता है। उसकी दृष्टि से पैसा और सरकार में अवैध संबंध हैं। पैसा राजनीतिक लोगों का यार है। नाटककार ने विशिष्ट सैनिक का बाह्य व्यक्तित्व के कुछ संकेत दिए हैं कि विशिष्ट सैनिक काफी देर तक अपना सिर खुजलाता है, फिर अपना सिर दबाना आरंभ कर देता है। वह जगह-जगह से इतना पिलपिला लगता है, जैसे पका हुआ पपीता हो। उसके भीतर कर्तव्य से अधिक स्वार्थ जगता है। वह समझ जाता है कि ब्राह्मण से और अधिक बातचीत, उसके अपने स्वास्थ के लिए हितकर नहीं है।

संक्षेप में नाटककार ने विशिष्ट सैनिक सरकारी मुलाजिम होने के कारण ब्राह्मण के बातों पर सरकारी ढंग से बहस करता है यह स्पष्ट किया है।

3.1.2.3 ***चपरासी, चपरासी*** *1, 2, 3, 4, 5* -

'शम्बूक की हत्या' नाटक में सरकारी दफ्तर का दृश्य होने के कारण चपरासियों की संख्या बहुत है। फिर भी सब के वार्तालाप से वह अपने पेशे की खासियत, चापलूसी पाठक तक पहुँचाते हैं। चपरासी अपने वर्दी को पहनकर बड़े रोब से पुलिस इन्स्पेक्टर के सामने आते हैं। चपरासी के बाह्य व्यक्तित्व की झलक कभी उनके चेहरे पर चमक आती लेकिन बुझ जाती है, जैसे दिल्ली-विद्युत-प्रदाय की बिजली से जलनेवाला बल्ब हो। चपरासियों की सोच सब-इन्स्पेक्टर के साथ वार्तालाप करते समय समझ में आती है। ये सब शम्बूक की मृत्यु का कारण देश की दुर्गति मानते हैं। उनके मतानुसार मिलावटी भोजन, मँहगाई, पुलिस के अत्याचार, विरोधि दल से हत्या, कॉलेज के युनियन चुनाव आदि से उनके दूर तक सोचने की क्षमता का पता चलता है। क्लर्क

द्वारा क्रांतिबाबू को बुलाने को कहने पर चपरासी बड़ी अककड़ता से कहता है- ''कौन देर से आया है ? लंच के बाद आधा घण्टा पानी पीने की छुट्टी होती है। खुद तो साले कुर्सी पर बैठे-बैठे सोते रहेंगे और गरीबों की पानी-छुट्टी भी बर्दाश्त नहीं कर सकते।''[12] नाटककार ने यहाँ पर चपरासियों के विविध गुणों, स्वभाव वैशिष्टों को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। नाटककार ने चपरासियों के बाह्य व्यक्तित्व की झलक पाँचवमें चपरासी द्वारा स्पष्ट किया है कि बी. ए. पास करने के कारण वर्दी न पहननेवाला और कॉलेज के जमाने का बेलबॉटम और टैरिलीन की कमीज पहनकर लंबे-लंबे घुँघराले बाल के साथ नाटक में खड़ा किया है जो आधुनिकता को दर्शाता है। सरकारी कार्यालय में प्रवेश करने के लिए इन देवतामहाशय को रिश्वत देकर प्रसन्न करना पड़ता है। इसे नाटककार ने चपरासी 1, 2, 3, 4, 5 के माध्यम से स्पष्ट किया है। इनके चरित्र-चित्रण के माध्यम से उनकी विविध प्रकार की प्रवृत्तियों पर चिंतन किया है।

3.1.3 पौराणिक पात्र -

नाटककार नरेंद्र कोहली जी ने पौराणिक पात्रों का परिचय संक्षेप में दिया है। आधुनिक कथा का विकास करते समय पौराणिक मिथक का सहारा लेकर आधुनिक युगबोध को, समकालीन बोध को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। ब्राह्मण खुद को रामायण से आया मानता है इसीकारण रामायण के प्रसंगों द्वारा पात्रों का चरित्र स्पष्ट होता है।

3.1.3.1 विश्वामित्र -

विश्वामित्र आधुनिक युग का वोटदाता जो दशरथ रूपी राजनीति को राम और लक्ष्मण को माँगने पर दशरथ सोचने लगता तो गुस्से में विश्वामित्र - ''दशरथ ! तू राक्षसों को मार देगा, तो अगले चुनाव में तुझे वोट कौन देगा ? तेरे चुनाव-फंड़ में धन कहाँ से आएगा ?''[13] यहाँ पर विश्वामित्र आधुनिक युग की जनता का प्रतिनिधि है। विश्वामित्र अपने साथ राम और लक्ष्मण को लेकर जाता है और उनसे ताड़का रूपी राजनीतिक भ्रष्टाचार, मारीच और सुबाहू जैसे गुंड़ागर्दी, कालाधन राक्षसों को मारकर अपना आंदोलन सफल बनाने का सोचता है। नाटककार ने विश्वामित्र को आधुनिक युग का बुद्धिजीवी प्राणी जो राजनीति के सारे भेद जानकर खुद भ्रष्ट राजनीति का उन्मूलन करने की अपेक्षा दूसरों को भ्रष्टता की सलाह देते हैं। संक्षेप में नाटककार ने बुद्धिवादी लोगों पर व्यंग्य किया है।

3.1.3.2 दशरथ -

नाटक में दशरथ राजनीतिक लोगों का प्रतीक होने से देश में राक्षसी वृत्ति, रिश्वतखोरी, गुंड़ई को अपने चुनाव फंड के लिए बढ़ावा देता है। विश्वामित्र के गुस्से को शांत करने के लिए दशरथ उनसे कहता है- ''महाराज ! नाराज न हों। वनस्पति घी अवश्य मिलेगा। आयम सॉरी, मैं राक्षसों को अवश्य मार दूँगा।''[14] नाटककार ने यहाँ पर आधुनिक और पौराणिकता का संबंध स्पष्ट किया है।

3.1.3.3 ***परशुराम -***

नाटक में क्रांतिबाबू को परशुराम का अवतार मानते समय परशुराम का उल्लेख मिलता है। परशुराम रामायण में सदा क्षत्रियों के खिलाफ गुस्से से देखता है। परशुराम द्वारा राम को धमकाते समय - ''मैंने सदा क्षत्रियों का नाश किया है, तुम्हारा भी नाश करूँगा, क्योंकि तुम भी क्षत्रिय हो....''[15] इस प्रसंग के द्वारा नाटककार ने परशुराम का राजाओं के साथ झगड़ा था तो आजकल के गजेटेड ऑफिसर राजनीतिज्ञों पर व्यंग्य करते रहते हैं। संक्षेप में परशुराम पौराणिक और आधुनिक दोनों युगों में क्रांति चाहता है यह स्पष्ट किया है।

संक्षेप में 'शम्बूक की हत्या' नाटक पौराणिक के द्वारा आधुनिकता पर प्रकाश डालता है। इसमें दोनों युगों के पात्रों की संरचना द्वारा इतिहास को वर्तमान से जोड़ा गया है। नाटककार ने पात्रों की संरचना आकर्षक और सफलतापूर्वक की है। प्रत्येक पात्र को विशिष्ट चारित्रिक विशेषताओं के साथ प्रस्तुत किया है।

3.2 ***हत्यारे -***

'हत्यारे' नरेंद्र कोहली जी का एक चिंतन परक मनोविश्लेषण प्रधान नाटक है। इस नाटक में कथा की अपेक्षा कथ्य ही प्रबल है। नाटक का कथ्य पात्रों द्वारा दर्शकों तक पहुँचाया जाता है। कथ्य प्रबल होने के कारण पात्रों का व्यक्तित्व भी प्रबल रूप में उभर उठा है। इस नाटक में पात्रों का आंतरिक संघर्ष प्रबल रहा है। इस नाटक में पात्रों के व्यक्त और अव्यक्त दोनों मनोभावों का चित्रण उभर उठा है। नाटककार ने प्रमुख चार पात्रों के साथ कथाविकास की दृष्टि से गौण पात्रों का भी समावेश किया है। संक्षेप में नाटककार ने कथाविकास की दृष्टि से पात्रों के चरित्र को गठाने का प्रशंसनीय काम किया है।

3.2.1 मुख्य पात्र -

3.2.1.1 बनारसीदास -

प्रस्तुत नाटक में बनारसीदास का चरित्रांकन कोहली जी ने पैनेपने से किया है। बनारसीदास पचहत्तर वर्षीय बूढ़े हैं, जो अपने को सबसे अलग व्यक्तित्ववाले मानते हैं। बनारसीदास एक स्वार्थी, किसी पर विश्वास न करनेवाला, अपने से ही प्यार करनेवाला घोर व्यवहारवादी पात्र है। अनिल द्वारा ऑपरेशन की बहस पर वे कहते हैं- ''पचहत्तर वर्ष का हो गया। बहुत जी लिया। अब और क्या है, जिसके लिए मुझे जिलाए रखना चाहते हो ?''[16] वे ऑपरेशन को रक्तपात मानते हैं, मुस्कुराकर बात टालने का प्रयास करते हैं। वे स्वभाव से गंभीर चेहरे के, चिंताक्रांत स्वभाव के, जड़ मुद्रा के, शीघ्रता से बातों को काटने की प्रवृत्ति को दिखाकर उनके व्यक्तित्व के आंतरिक भावविश्व पर प्रकाश डाला है। अपनी जिम्मेदारियों को टालने के आदि हैं।

बनारसीदास अधिक संतानों की पैदास में उत्साह दिखाते हैं पर संतानों के प्रति स्वीकार नहीं करते हैं। रमेश की हत्या को बनारसीदास द्वारा जिम्मेदार खुद होकर भी इसे स्वीकार नहीं करते हैं। रमेश की हत्या को बनारसीदास द्वारा जिम्मेदार ठहराने पर वे कहते हैं- ''हमारे घरों में अपने बच्चों को बड़े गलत संस्कार दिए जाते हैं, झूठी शिक्षा दी जाती है....''[17] रमेश की हत्या को पड़ोसियों द्वारा शहीद का रूप देने पर वे गर्व से पुलकित होते हैं। बनारसीदास के बच्चे उनके स्वभाव की घृणा करते हैं कारण बनारसीदास उनकी गलतियों को स्वीकार नहीं कर सकते हैं। रमेश की मौत की खबर सुनकर दुःख होने की अपेक्षा सोचते हैं कि - ''जीते-जी उसने कोई सुख नहीं दिया। यदि और जीता रहता, तो भी उससे सुख की कोई आशा नहीं थी। चलो अच्छा हुआ, अपने होश-हवास में उसके जीवन की पुस्तक बंद होते देख ली। अब वह ऐसा कुछ नहीं कर सकता जिससे हमें दुःख पहुँचे या उसे कोई तकलीफ हो।''[18] बनारसीदास के क्रब में लटके पैर वैजयंती के पास दस लाख रुपए का सोना होने की खबर सुनते हैं, उसी समय वे आनंद के मारे दौड़ने लगते हैं, उसका झक्की दिमाग दूर की कौड़ी लाने में जूट जाता है, वे सोचते हैं- जीवित शरीर की चीर-फाड़ करनेवाले डॉक्टर जो जीवन देते हैं- उसे हत्यारे लगते हैं, परंतु पैसे की गंध उसे खुद इसी चीर-फाड़ करने पर उतारू कर सकती है। बनारसीदास अपने जीवन पर इस आयु में

भी अपना पूर्ण अधिकार चाहता है, परंतु उसने कभी अपने बच्चों के जीवन को समझने का प्रयत्न नहीं किया है।

संक्षेप में नाटककार ने बनारसीदास द्वारा उनकी झक्की प्रवृत्ति, लापरवाह आदतें, गैरजिम्मेदारी से युक्त स्वभाव, आत्मकेंद्रितता और अर्थकेंद्रितता पर गहराई से चिंतन किया है।

3.2.1.2 ***शांति -***

प्रस्तुत नाटक की शांति बनारसीदास की पत्नी है, जो बरसों से उनकी मर्जी, बर्ताव, बर्दाशत कर रही है। उसकी जिंदगी खीझी और दबी हुई है, वह पति परायना, भारतीय परंपरा को चौखट में आबद्ध नारी है। शांति अपने पति द्वारा ऑपरेशन के विरोध दुःखी है उनके बच्चे दूसरों के बच्चों जैसे नहीं हैं। वे माँ-बाप का खयाल नहीं रखते। सबको हर वक्त खुद की की ही फिक्र रहती है। जिसका सामना बनारसीदास नहीं कर सकते। शांति रमेश की खबर सुनकर चिंतित होती है और वह भगवान से उसकी जान बचाने की प्रार्थना करती है। रमेश की मौत पर शांति की ममता दिल को कोसती है कि उसकी शादी हुई होती तो बहु के भाग्य और सुहाग के बल पर उसकी जान बच सकती। क्योंकि समाज में ऐसे बहुत से किस्से हुए हैं इसका स्पष्टीकरण करती हुई कहती है- ''विवाह के बाद बहुत-बहुत लोगों को बदलते देखा है मैंने। जिम्मेदारी की बेड़ियाँ चाल को थिर कर देती हैं।''[19] अनिल के पड़ोसी आने पर वार्तालाप के दौरान वह अपने दुःख में विवश होकर भगवान से प्रार्थना करती कि भगवान ने संतान को दिया है तो उसे ऐसा मत छीन ले। अनिल द्वारा पुलिस में जाने की बात पर विरोध करती हुई शांति की ममता अपने बाकी बच्चों को परेशानी, हवालात, कैद आदि की झंझटों से बचाना चाहती है। रमेश की मौत की खबर सुनने पर बनारसीदास की गैरजिम्मेदार बातों को सुनकर शांति की ममता उन्हें पत्थर दिल का आदमी मानकर धिक्कारती है। वैजयंती को कठोरता से बेटे की मृत्यु के बाद उसके बातों से वास्ता न रखने का फैसला सुनाती है। खन्ना रमेश का दोस्त होने से उसकी खातिरदारी करती पर वैजयंती के बारे में जिक्र सुनकर उसके बारे में कठोर और कड़वी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। बनारसीदास के द्वारा वैजयंती को ढूँढ़ने के निर्णय का भी विरोध करती है।

संक्षेप में नाटककार ने यहाँ पर शांति को एक ममताभरी माँ, पुरुषप्रधान संस्कृति के नीचे दबी हुई भारतीय शोषित नारी, कठोर विचारोंवाली स्त्री के रूप में चित्रित करके पति की गैरजिम्मेदारी के प्रति उनकी बौखलाहट को दिखाया है।

3.2.1.3 ***अनिल -***

'हत्यारे' नाटक का अनिल अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति एक सचेत युवक है, जो नाटक में शुरू से अंत तक मौजूद है। अनिल बनारसीदास की बेटी शालिनी का पति है, जिसने बनारसीदास के परिवार की गंभीर जिम्मेदारियों को अपने कंधों पर उठाया है। नाटक में अनिल को एक कर्तव्यदक्ष, संवेदनशील व्यक्ति दिखाया है। वह जामात होकर भी बनारसीदास पर पितृवत प्रेम करता है। वह उनके ऑपरेशन द्वारा उनकी जिंदगी को बढ़ाना चाहता है। अनिल समझाता है कि बच्चों को माँ-बाप बचपन में पालते हैं, तो बड़े होकर माँ-बाप की सेवा करना बच्चों का कर्तव्य है। इससे अनिल की बड़ों के प्रति कर्तव्यभावना स्पष्ट होती है। रमेश की खबर को पढ़कर तुरंत अपने बंबई के ऑफिस में फोन करके खबर की सच्चाई जानने का प्रयत्न करता है। खबर की सच्चाई समझने पर वह पूरी जानकारी के लिए बंबई जाने का निर्णय लेता है। इस खबर का असर उस पर इतना होता है कि वह भारी कदमों से सबको प्रश्नभरी दृष्टि से देखता है, जमीन को ताकता हुआ चुपचाप सिगारेट पीने लगता है। बोलने के लिए हिम्मत बटोरता है और बाद में शांत स्वर में बोलना शुरू करता है। पूरे नाटक में अनिल संयमी, शांत, भावुक, कर्तव्यपरख, होशियार व्यक्ति के रूप में सामने आता है।

अनिल बंबई से वापस लौटने पर वह मुंबई की पूरी तहकीकात को शालिनी के सामने प्रस्तुत करता है। उस समय उसके चेहरे पर आश्चर्य, धोखा, कड़वाहट आदि भाव उभरने लगते हैं। बनारसीदास की अधिक खातिर करता है, शालिनी के अपने पिता के प्रति चिंतित भाव को देखकर उसका हौसला बढ़ाता है। रमेश की लाश का पता तक न चलने की सच्चाई को शांत भाव से विशद करके वह वातावरण को हलका बनाता है। अनिल आधुनिक युग का नवयुवक होकर भी कर्तव्य और पारिवारिक प्रेम, आधार को जीवन में महत्त्वपूर्ण मानता है। अनिल सबके विचारों, बातों को सुनकर बनारसीदास को रमेश की हत्या का जिम्मेदार मानकर दुःख में कहता- ''बड़े परिवार का एक फालतू बच्चा! पैदा करके डाल दिया हत्यारों के शिकार के लिए.....''[20] संक्षेप में

अनिल द्वारा नाटककार स्वयं पाठक तक पहुँचकर जीवन में परिवार का प्यार, संरक्षण, संस्कार ही जीवन को अच्छी दिशा में ले जाता है। इसे स्पष्ट कर देता है। सुरेश के पुलिस संबंधी विचारों से अनिल सहमत नहीं, क्योंकि उसके किस्से को सुनकर वह कहता है- जिस चर्चा से सारे मानव-समाज का सिर शर्म से झुक जाना चाहिए, उसके चटखारे लिए जा रहे हैं.... उन योजनाओं को सराहा जा रहा है....''[21] इस विड़ंबना को वह बर्दाश नहीं करता। जो बातें औरों को विचलित तक नहीं कर पाती, अनिल को दूर-दूर तक छू जाती हैं। बनारसीदास का वैजयंती के प्रति बर्ताव उसे अच्छा नहीं लगता। उसी दौरान खन्ना के साथ बातें न करने की इच्छा पर मजबूरी से बोलकर तिखा व्यवहार करता है।

संक्षेप में अनिल आधुनिक होकर समाज, परिवार, रीती-रिवाज का पालन करनेवाला आज्ञाकारी नवयुवक है। वह सेवाभावी प्रवृत्ति से अपने ससुर की सेवा करता है, उनकी दिक्कतों में उनकी मदद करता है।

3.2.1.4 शालिनी -

'हत्यारे' नाटक में मुख्य पात्रों में शालिनी पति और पिता दोनों के बीच की एक कड़ी और समीकरण बनकर रह रही है। शालिनी अनिल की पत्नी बनारसीदास की बेटी है। रमेश की हत्या की खबर से परेशान होती है, फिर भी पिता को आधार देती हैं। शालिनी शांत, कोमल, समझदार, भावुक स्वभाव की है। रमेश की खबर से सब परिवार परेशान होने पर सभी का ध्यान आकर्षित करने के लिए पिता के लिए पाईप लाने का किस्सा बताती है और बोझील वातावरण को हलका बनाती है। बनारसीदास की परेशानी को दूर करने के लिए उन्हें समझाती हुई कहती है- ''आप घबराइए नहीं पापा ! हो सकता है कि किसी ने झूठ तार दिया हो। वे कह रहे थे न कि कुछ लोगों को दूसरों को परेशान करने में भी मजा आता है।''[22] रमेश की खबर को सुनकर हमदर्दी दिखाने के लिए आए पड़ोसियों के सामने वह नम्रता से अपने भाई के कर्तृत्व को बताती है। नाटक में हर समय शालिनी की सेवाभावी वृत्ति दिखाई देती है। अनिल द्वारा खन्ना के कर्तृत्वों की जानकारी पर विस्मय से फटी हुई आँखों से देखती रही। अनिल द्वारा हत्यारों को पकड़ने के लिए पुलिस पर दबाव न डालने के निर्णय पर गहरी दृष्टि से देखती है, परंतु सच्चाई मालूम होने पर

अनिल के सीने पर सिर रखकर गहरी साँस लेकर प्रेम व्यक्त करती है। परिवार के सभी लोग रमेश की बातें बचपन की बातें याद करके उसकी आँखें रमेश की यादों से गीली होती हैं।

रमेश के हत्यारों की खोज करने संबंधी अनिल द्‌वारा पुलिस की मदद लेने से इन्कार पर वह उसे समझाती हुई कहती है- "आप ऐसी कड़वी बातें क्यों कर रहे हैं ? जानते तो हैं कि ऐसा करने का परिणाम क्या होगा।"[23] वैजयंती के साथ बनारसीदास का पेश आना उसे पसंद नहीं आता। खन्ना की मेहमान होने के कारण खातिरदारी करती है, परंतु अंदर उसके प्रति कड़वाहट व्यक्त करती है। बनारसीदास द्‌वारा वैजयंती को ढूँढ़ने का निर्णय लेने पर शालिनी उस औरत के बारे में सोचती रहती है।

संक्षेप में नाटककार से शालिनी के माध्यम से एक सुसंस्कृत, समझदार बेटी, आदर्श पत्नी और भद्र औरत का चित्र खींचने का प्रयत्न किया है।

3.2.1.5 ***रमेश*** -

नरेंद्र कोहली के 'हत्यारे' नाटक का पात्र रमेश रंगमंच पर उपस्थित रहे बिना अपना चारित्रिक प्रभाव बाकी पात्रों पर छोड़ता है। आत्मविश्वास खोता हुआ रमेश का चरित्र नाटक में अंत तक समाया है। नाटक की पूरी कथा उस पर आधारित है। रमेश बनारसीदास और शांति की अंतिम संतान है . अधिक संतानोंवाले परिवार में जन्म लेने से परिवारवालों द्‌वारा उसके प्रति निभाई जानेवाली वे जिम्मेदारियों के कारण उसका जीवन मौत की खाई में जा गिरता है। रमेश का आठवीं फेल होने पर पापा द्‌वारा स्कूल की फिस भरने से इन्कार करने पर रमेश ने परीक्षा में नकल करनेवाले बच्चों को किताबें पहुँचाने का काम शुरू किया। रमेश जीवन को ठीक ढंग से जीना चाहता था, पर सभी ओर से उसे उपेक्षा ही मिली। उसके द्‌वारा सही जीवन की ओर बढ़ने का प्रयत्न करने पर भी, सब लोग उसे मौत की ओर धकेलते रहे। रमेश जीवन को सवारने के लिए बंबई में जाकर बसता है। वहाँ पर गलत लोगों के कुचक्र में फँस कर हत्या का शिकार होता है। रमेश परिवार से दुःखी होने के कारण वैजयंति के पास पनाह लेता है। रमेश का बच्चा उसकी पेट में पलता है। नाटककार के मतानुसार रमेश को साथ-संग अच्छा नहीं मिला, पिताजी ने कभी उसे विवेक-सम्मत राय ही नहीं दी। उसके बड़े भाईयों ने उससे बंधुआ-मजदूरों जैसा काम करवाया। इससे रमेश धीरे-धीरे परिवार से टूटता गया और हत्या का शिकार हुआ। नाटककार ने रमेश को

परिस्थिति की उमंग मानकर उसकी हत्या और अवैध व्यवसाय करने की प्रवृत्ति का जिम्मेदार उसके परिवार को एवं माता-पिता को ठहराया है।

3.2.2 गौण पात्र -

3.2.2.1 सुरेश -

सुरेश व्यावहारिक पात्र के रूप में नाटक में उपस्थित होता है। सुरेश बनारसीदास का सबसे बड़ा बेटा है जो अब कलकत्ता में रहता है। रमेश की खबर मिलते ही परिवार के पास आता है। सुरेश रमेश की हत्या का जिम्मेदार अपने पिताजी को मानता है, जिन्होंने अधिक संतानों के कारण सभी संतानों के साथ फालतू व्यवहार किया। सुरेश को भी पिताजी ने फेल होने पर घर न आने को कहा था। उसने टॅक्सी ड्रायव्हर का काम करके जीवन को संवारा था। अनिल द्वारा पुलिस के पास न जाने की जिद्द का विरोध करते हुए सुरेश उसे बलात्कार का किस्सा बताकर अपनी चौवन्नी दृष्टि का परिचय देता है। रमेश की हत्या पर और पुलिस द्वारा वैजयंती की पूछताछ करने पर अपने पिता बनारसीदास की परेशानी को देखकर उन्हें समझाते हुए कहता है- ''आप तो बेकार परेशान हो रहे हैं, पापा ! कागजी कारवाई है.... या कुछ पैसा वसूलने की चाल। थोड़ा-बहुत दे देंगे- अधिक तंग करेंगे तो हमें भी निबटना आता है। आपको याद नहीं वह इंन्स्पेक्टर वेदप्रकाशवाला किस्सा ?''[24] संक्षेप में सुरेश इस नाटक में एक चौकन्ना, व्यवहारवादी, स्वार्थपूर्ण पात्र लगता है। वह भी प्रतिकूल परिस्थिति में टैक्सी ड्राईवर बनकर अपने जीवन को संवार लेता है, उसका जीवन भी परिवेश की उपज लगता है।

3.2.2.2 परेश -

परेश बनारसीदास का नौकरी पेशावाला पुत्र है। रमेश की हत्या की खबर पर माँ-बाप के पास आता है। वह भी परिवार के सभी सदस्यों के अनुसार रमेश की ऐसी हालत को बनारसीदास को जिम्मेदार मानता है। परेश के साथ भी बनारसीदास ने कठोर व्यवहार किया था। बिना टिकीट यात्रा करने पर उसे जेल होती है, उसे रीहा करने की अपेक्षा उसके पिता बनारसीदास उसे पुलिस के हवाले कर देते हैं। इससे वह संवारता है। परेश एक भावुक चरित्र है, जो रमेश पर हुए अन्याय के खिलाफ आवाज उठाकर उसकी मदद करने के लिए विवश भी होता है। संक्षेप में परेश अपने भाई रमेश की कत्ल से दुःखी होता है और पिताजी को इसका जिम्मेदार मानता है।

3.2.2.3 उर्मिला -

उर्मिला बनारसीदास की बड़ी लड़की और भाई-बहनों की दृष्टि से पुरखिन हैं। उर्मिला बनारसीदास के विचारों पर गुस्सा होती है और अपने भाइयों को दिक्कतें आने पर गार्जियन के रूप में साहयता भी करती है। अपने ससुराल में नौकर-चाकर होकर भी बीमार रहती है। उर्मिला सबको एक-साथ देखने की इच्छा रखती है। उर्मिला सभी परिवार के सदस्यों से प्रेम करनेवाली औरत लगती है।

3.2.2.4 स्त्री, पुरुष -

नाटककार ने 'हत्यारे' नाटक में अनिल के पड़ोसियों का उल्लेख स्त्री 1, 2 व पुरुष 1, 2 करके कथा का विकास करने का प्रयत्न किया है। रमेश की हत्या की खबर पर पड़ोसी सदस्य दुःख में हमदर्दी दिखाने के लिए सफेद वस्त्र परिधान करके शांत मुद्रा से पेश आते हैं। रमेश के कर्तृत्व की प्रशंसा करके उसके मृत्यु पर शोक व्यक्त करते हैं। उसी दौरान मुंबई के वातावरण पर बहस करके रमेश को शहीद मानते हुए उसके नाम पर संस्था निकालकर पुरस्कार देना चाहते हैं। सब उसकी बहादुरी की प्रशंसा करते हैं।

नाटककार नरेंद्र कोहली ने 'हत्यारे' नाटक में पात्रों को लेकर ही एक परिवार के आंतरिक स्थिति पर व्यंग्य किया है। रंगमंच पर एक दृश्य दिखाते समय तीन या पाँच पात्र उपस्थित करके नाटककार कथा को प्रभावित करता है। नाटककार ने मनोविश्लेषणात्मक ढंग से पात्रों को ढालकर नाटक को सफल बनाया है।

3.3. निर्णय रूका हुआ -

'निर्णय रूका हुआ' नाटक में पात्रों की संख्या अधिक होने पर भी पात्रों की अभिनय क्षमता की कुशलता से पात्र नाटक में जान डालते हैं। नाटक के सभी पात्र कथाविकास के लिए आवश्यक हैं। नाटककार ने सभी पात्रों को अभिनय करने का उचित अवसर देकर पात्रों को सक्रिय और प्रभावी बनाने की कोशिश की है। नाटककार ने नए तंत्र द्वारा दृश्य सज्जा को बिना बदले कथा-विकास की दृष्टि से दूसरी कथा का अभिनय किया है। नाटक के सभी पात्रों की अपनी विशेष चारित्रिक विशेषताएँ बनाए रखते हैं फिर भी उनके चरित्र से कोई-न-कोई संदेश, संकेत जरूर पाठकों को मिलता है। पात्रों का चरित्र-चित्रण घटनाओं की अपेक्षा संवादों से ही निखर आता है।

नाटक की कथा में मूल समस्या को स्पष्ट करने के लिए और तीन कथाओं को उभारा है। नाटककार ने पात्रों द्वारा जीवन संघर्ष, समस्याओं का हल ढूँढ़ने का प्रयास किया है।

इस नाटक में पात्रों की भरमार रही है फिर भी हर पात्र आवश्यक लगता है। 'रंगमंच पर ये पात्र दोहरी या तिहरी भूमिकाएँ अभिनिहीत करते हैं। फिर भी अभिनय की दृष्टि से 'निर्णय रूका हुआ' नाटक की पात्र-योजना अत्यंत सफल है, क्योंकि नाटक में पात्रों को संकेतों द्वारा अभिनय की जानकारी दी जाती है। पात्रों के चरित्रांकन में पूर्ण व्यवस्था दिखाई देती है अर्थात नाटककार ने नाटक के सभी पात्रों के साथ पूर्ण न्याय किया है।

3.3.1 प्रमुख पात्र -

3.3.1.1 शर्मा -

'निर्णय रूका हुआ' नाटक का मध्यवर्गीय परिवार में रहनेवाला प्रमुख पात्र है- शर्मा, जो नाटक में अंत तक मौजूद है। शर्मा नौकरीपेशावाला आधुनिक युग का पात्र है। दिल्ली जैसे महानग्र में रहने के कारण वे पूरी तरह आधुनिक ढंग से रहते हैं। शर्मा श्रीवास्तव की सहायता से मकान को बंगले जैसा बनाना चाहते हैं, पर उसके लिए पचीस हजार का प्रबंध करना कठिण मानते हैं। श्रीवास्तव की बातों पर चर्चा करने पर सावित्री गुस्सा होती है। शर्मा परेशान होकर कहता है- ''सोचता तो पहले ही हूँ। मेरी चलने दी होती तो अब तक मकान खड़ा हो गया होता।''[25] सावित्री पर वह गुस्सा प्रकट करता है। शर्मा गीता की रंगीन टी. वी. की माँग को उसकी प्रेम के खातिर स्वीकार करता है और सबको बुलाकर मकान की जानकारी देता है। सतीश द्वारा प्रस्तुत किए विचारों पर गुस्सा प्रकट करते हुए कहता है- ''पहले बाप बच्चों को नैतिकता सिखाता था अब बच्चे बाप को अनैतिकता सिखाते हैं।''[26] शर्मा घर की पूर्ति के लिए निकुंज से लिए जानेवापे कर्ज पर विचार करता है। वह बहुत कठोर बातें कहने से स्वयं को रोकता है। या हिम्मत बटोर कर अंत में कोई निश्चय कर उन लोगों की ओर देखता है। शर्मा जीवन की अतीत की पूँजी इस मकान प्र लगाते हैं परंतु भविष्य इसके कारण बंधक नहीं रखना चाहते।

शर्मा द्वारा परिवार के साथ वार्तालाप करते समय गीता और सावित्री के बीच के झगड़े पर वे चिल्ला उठते हैं। शर्मा का स्वर दृढ़, कठोर, शांत है। शर्मा के मित्र वर्मा आते तो उचककर खड़े हो जाते हैं। शर्मा द्वारा लकड़ी की समस्या को सुनकर वर्मा उन्हें दिल्ली से सस्त

भाव में लकड़ी देने की बात छेड़ी जाती है। वर्मा द्वारा बताए मार्ग से लकड़ी लाना उन्हें अच्छा नहीं लगता। शर्मा इस निर्णय पर व्यंग्य करते हुए कहता है- "बाजार से खरीदूँगा। पूरी कीमत देकर खरीदूँगा। उन व्यापारियों से खरीदूँगा, जो उसका मूल्य और पूरा महसूल देकर लाए हैं, और बिक्रीकर देकर बेच रहे हैं।"[27] वर्मा लकड़ी धोखे से लाने की कल्पना का विरोध करता है। उस नाटक को चीखकर बंद करने को कहता है।

संक्षेप में नाटककार ने शर्मा द्वारा एक सच्चे भारतीय नागरिक का रूप स्पष्ट किया है। लकड़ी को सत्ता पाने के लिए वह बेईमानी की राह पकड़ना नहीं चाहता है। मध्यवर्गीय व्यक्ति की ईमानदारी यहाँ शर्मा के माध्यम से स्पष्ट होती है।

3.3.1.2 ***सावित्री -***

सावित्री शर्मा की पत्नी और नाटक के नारी पात्रों में प्रमुख हैं। आर्किटेक्ट के मकान संबंधि विचारों को सुनकर अच्छे ढंग से मकान बनवाने की सलाह शर्मा को देते हैं। सावित्री गीता की बातें सुनकर उसे डाँटती है। शर्मा द्वारा कैकेयी कहने पर उसकी हालत कुछ हँसने और रोने के बीच की-सी बन जाती है। सावित्री पति के कार बेचने के निर्णय का विरोध करते- "घर चलाने के लिए उसने नौकरी नहीं कि पर शर्माजी की आय पर उसका पूरा अधिकार है।"[28] इससे सावित्री में आधुनिक विचारी नारी के गुण दिखाई देते हैं।

सावित्री शर्मा के मित्र वर्मा द्वारा मकान की लकड़ी सस्ते भाव में लाने की कल्पना से राधा मैजिस्ट्रेट और महाराणी की भूमिका भी बड़े अच्छे ढंग से पेश करती है। राधा के पात्र में करूण दृष्टि को, दया को, अपराध-बोध के भाव को, कुछ असहायता की भावना को स्पष्ट करती है। सावित्री आधुनिक युग की नारी होने के कारण अपना घर, बच्चे, रहन-सहन सब अच्छी खबर लेती है।

संक्षेप में सावित्री भारतीय नारियों की तरह घरेलु औरत होकर भी अपना अधिकार जमानेवाली नारी पात्र है। वह विचारी और परिवार के सभी सदस्यों की दखल लेनेवाली कुशल औरत है।

3.3.1.3 ***गीता -***

शर्मा और सावित्री की बेटी गीता पढ़ी-लिखी, शहर में रहनेवाली युवति है। वह पापा से रंगीत टी. वी. खरीदने का अभिवचन लेती है। इससे उसका हटीला स्वभाव दिखाई देता

है। मकान के वार्तालाप के दौरान सावित्री और सतीश गीता की टी. वी. की रट पर क्रोध व्यक्त करते हुए कहते हैं- ''पता नहीं, इस देश में कानून किसके लिए बनते हैं। यहाँ तो स्वयं स्त्री होकर भी माँ नहीं चाहती कि बेटी को जायदाद का हिस्सा....''[29] गीता का व्यक्तित्व शहर की आधुनिक लड़की का है, जो अपनी इच्छा-आकांक्षाओं की पूर्ति को महत्त्वपूर्ण मानती है लेकिन घर की समस्या उसके लिए कोई मायने नहीं रखती।

गीता वर्मा द्वारा निर्देशित नाटक में वकील और करूणा राजकुमारी का अभिनय करती हैं। गीता वकील बनकर अपने यजमान से पैसा लेकर, कानून को उसके पक्ष में मरोड़ती है। दूसरे नाटक में करूणा का अभिनय करते समय बड़ी नाटकीयता से पेश करती है।

संक्षेप में नाटककार ने इकलौती बेटी के लक्षणों को गीता द्वारा प्रस्तुत किया है। इकलौती बेटी के हट को माता-पिता द्वारा कैसे पूर्ण किया जाता है, यह भी यहाँ स्पष्ट होता है।

3.3.1.4 सतीश -

सतीश एक व्यावसायिक है। शर्माजी का सबसे बड़ा बेटा होने के कारण मकान से पहले अपना व्यवसाय जमाना चाहता है। शर्मा द्वारा मकान की समस्या पर सतीश शर्माजी को नैतिकता, अनैतिकता पर वार्तालाप करता है। गीता की टी. वी. की माँग की रट से उस पर गुस्सा होता है। शर्मा द्वारा गाड़ी बेचने की बात का विरोध करता है। व्यापारी होने के कारण धंदे में रोब जमाने के लिए गाड़ी महत्त्वपूर्ण मानता है।

वर्मा द्वारा अभिनीत नाटकों में चुंगी अधिकारी की भूमिका करने के लिए अनुभव न होने की बात को स्पष्ट करते हुए कहता है- ''मुझे रिश्वत माँगने नहीं आती। नहीं माँगूँगा तो चुंगी-अधिकारी कैसे बनूँगा।''[30] इस प्रसंग से उसकी व्यावहारिकता स्पष्ट होती है। सतीश चुंगी अधिकारी की भूमिका में जान डाल देता है।

संक्षेप में सतीश आधुनिक युग का नवयुवक होने के कारण कर्ज लेने में कुछ बंधक नहीं मानता। सतीश इसे आधुनिक युग का हल मानता है।

3.3.1.5 निकुंज -

निकुंज शर्माजी का सबसे छोटा बेटा है। निकुंज छोटा होने के कारण लाड़-प्यार के कारण उसे बिगाड़ दिया है। गीता उसे बुलाने जाती है और पापा से टी. वी. संबंधी बात करने की

सूचना देती है। इस पर निकुंज घुस्से में कहता है- ''पड़ोसियों को भी बुला लाऊँ, ताकि वे जान सके कि किन शर्तों पर वे हमारा रंगीन टी. वी. देख सकेंगे।''[31] निकुंज कॉलेज की ट्रिप में कश्मिर जाना चाहता है। घर में मकान संबंधी चर्चा से उसका कोई मतलब नहीं है। निकुंज वर्माजी के नाटक में पुलिस इन्स्पेक्टर का अभिनय करते समय पुलिस की तरह हर वाक्य की शुरूवात गालियों से करना, सबके प्रति गुस्सा प्रकट करता है, पुलिस की तरह नालायकी से बाज आता है, वेशभूषा, रहने का ढंग आदि की हु-ब-हु नकल करता है। निकुंज एक जिद्दी, हट्टी पात्र के रूप में नाटक में आता है।

3.3.1.6 ***श्रीवास्तव*** -

शर्माजी के मकान के आर्किटेक्ट श्रीवास्तव हैं। श्रीवास्तव अपनी भाषा से शर्माजी को मकान का काम लकड़ी में करने की सलाह देते हैं। श्रीवास्तव शर्माजी को पंजाबी मित्र का किस्सा बताकर वास्तविकता को सामने लाने का प्रयत्न करते हैं। श्रीवास्तव द्वारा शर्माजी को कर्ज लेने की तरकीब बताते हुए कहता है- ''पचासों संस्थाएँ हैं। प्राविडेंट फेंड से ले, दिल्ली प्रशासन से ले, जीवन-बीमावालों से ले। वह जो लोकनायक भवन है न.....''[32] इस संवाद से श्रीवास्तव के आधुनिक दृष्टिकोण के दर्शन होते हैं।

वर्मा द्वारा अभिनिहीत नाटक में श्रीवास्तव को डिपो-इंचार्ज बनाया जाता तो वह अपने अभिनय से डिपो-इंचार्ज के दुःखी व्यक्तित्व को पाठक तक पहुँचाने में सफल हुए हैं।

3.3.1.7 ***वर्मा*** -

'निर्णय रूका हुआ' नाटक का प्रमुख और महत्त्वपूर्ण पात्र वर्मा शर्माजी के पत्रकार दोस्त हैं। पत्रकारों के व्यक्तित्व के सारे गुण वर्मा में दिखाई देते हैं। पत्रकार अपनी पहचान देश के बड़े-बड़े लोगों से रखते हैं और उन्हें अपना काम करने के लिए डराते-धमकाते हैं, जैसे- ''मुझे जानते हो ? पत्रकार हूँ। समाचार-पत्र में छपेगा यह सब ! जानते हो नौकरी भी नहीं रहेगी। परिवार दाने-दाने को तरस जाएगा।''[33] इस तरह वर्मा अपने पेशे का रोब लोगों में दर्शाकर अपना काम पूरा करते हैं। वर्मा नाटक में एक होशियार, चालाख, दूर तक सोचनेवाला, परिस्थितिनुरूप बदलनेवाला व्यक्ति के रूप में नाटक में उभर उठा है।

वर्मा पूरे नाटक में विभिन्न घटनाओं, कथाओं के द्‌वारा शर्माजी को मकान के लिए लकड़ी सस्ते भाव में कैसी लाई जा सकती है इससे स्पष्ट करते समय कई महत्त्वपूर्ण सुझाव देते हैं। वर्मा नाटक में निर्देशक की भूमिका भी अच्छे ढंग से पेश करते हैं। वर्मा द्‌वारा नाटकों का सही निर्देशन करके समस्या का हल बिना झंझट से रिश्वत द्‌वारा कैसे हल हो सकता है, इसका चित्रण स्पष्ट करते हैं। वर्मा आधुनिक युग के होने से अपना काम रिश्वत देकर करना उचित मानता है। शर्माजी को यह अच्छा नहीं लगता और वह सही मार्ग से लकड़ी लाने का निर्णय लेते हैं। वर्मा आधुनिक युग का होने से आधुनिकता पर व्यंग्य करता हुआ कहता है- ''राष्ट्रपति के पोते को पचहत्तर पैसे का डोसा खिलाने के लिए भारतीय वायुसेना का विमान बंगलौर जा सकता है। छोटे-छोटे अधिकारियों, संसद-सदस्यों और विधायकों के घरों के एक महीने के टेलीफोन के बिल आपका मकान खड़ा कर दें।''[34] इससे व्यंग्यात्मकता स्पष्ट होती है।

'निर्णय रूका हुआ' नाटक के सभी पात्र अपने आप में चारित्रिक विशेषताएँ बनाए हुए हैं। पात्र योजना की दृष्टि से नाटक सफल रहा है। नाटककार द्‌वारा नए नाट्य-तंत्र को पात्रों का सहारा लेकर अच्छे ढंग से स्थापित किया है। नाटककार द्‌वारा लकड़ी की जटिल समस्या को वर्मा द्‌वारा हल करते हैं। नाटककार ने शर्मा और वर्मा द्‌वारा आधुनिक युग का चित्र खींचने का प्रयास किया है। आधुनिक युग के देशप्रेम और परिस्थिति अनुरूप रहना ये दो प्रवृत्तियाँ आकर्षक उचित व्यक्तित्वसंपन्न पात्रों द्‌वारा विश्लेषित करने में नरेंद्र कोहलीजी सफल हुए हैं।

समन्वित निष्कर्ष -

'शम्बूक की हत्या', 'हत्यारे', 'निर्णय रूका हुआ' इन तीन नाटकों को हमने प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय बनाकर इन नाटकों में स्थित पात्रों का अनुशीलन करने का प्रयत्न किया है। 'शम्बूक की हत्या' में प्राचीन और आधुनिक दोनों प्रकार के कुल दस पात्र हैं। प्राचीन पात्रों के मिथ के आधार पर नाटककार ने आधुनिक युगबोध को साकार किया है। प्राचीन पात्रों पर आधुनिक पात्रों को हावी करके प्राचीनता में आधुनिकता के दर्शन नाटककार ने हमें करा दिए हैं। ये सारी पात्र परिवेश और स्थिति के परिचायक बनकर आधुनिक समसामयिक स्थिति के दर्शन हमें कराते हैं। 'शम्बूक की हत्या' का ब्राह्मण राजनीतिक, प्रशासकीय अनारकी पर एक तरफ से बढ़नेवाले दरिद्रता पर अकाल-पीड़ित स्थिति में होनेवाले भूखबलि पर, पुलिस और प्रशासकीय

व्यवस्था के भ्रष्टाचार पर, राजनेताओं की देश के प्रति, देश निष्ठा के प्रति, देश प्रेम के प्रति अनास्था पर, राजनीति के प्रश्रय में पलनेवाली गुनहगारी पर गहराई से चिंतन करने को हमें बाध्य करता है। प्रशासन व्यवस्था के पक्षधर क्लर्क, क्रांतिबाबू, पुलिस, सब-इनस्पेक्टर, विशिष्ट सैनिक, कान्स्टेबल, हेड कान्स्टेबल, चपरासी आदि सारे पात्र प्रशासन की भ्रष्टनीति का समर्थन करते हैं। ये सारे पात्र आधुनिक शासन तंत्र के रवैए पर प्रकाश डालते हैं।

इस नाटक में प्राचीन पात्रों के रूप में विश्वामित्र, दशरथ और परशुराम महत्त्वपूर्ण योगदान निभाते हैं। शम्बूक, विश्वामित्र, दशरथ आदि पुराने पात्र अपने विचारों के माध्यम से आधुनिक प्रशासकीय अनारकी को ध्वस्त करने का संकेत देते हैं। कुल मिलाकर इस नाटक में प्राचीन आधुनिक पात्रों के माध्यम से आधुनिक शासनप्रणाली पर गहरा और कठोर व्यंग्य किया है।

'हत्यारे' नाटक में कुल ग्यारह पात्रों का समावेश करके नाटककार ने दिल्ली और मुंबई महानगरीय जन-जीवन की असुरक्षितता पर प्रकाश डाला है। इस नाटक में रमेश की हत्या परिवेश की उपज लगती है। परिवार में अधिक बच्चों की पैदास होने पर माता-पिता द्वारा दुर्लक्ष होता है, जिससे भविष्यत में बच्चे गैरमार्ग का अवलंब करके गैरव्यवसाय में जुट जाते हैं। रमेश इसका अच्छा गवाह है। इस नाटक में पिता के रूप में बनारसीदास एक असफल पिता हैं, माताजी शांती भी सतर्क होकर असफल माता लगती है। रमेश की बहन शालिनी, उर्मिला ये नारी पात्र परिवार के प्रेमी पात्र हैं। इस संयुक्त परिवार के प्रेम को वे अटूट रखना चाहती हैं। रमेश के भाई सुरेश, परेश ये भी पिताजी की गैरजिम्मेदारी से आहत है। दोनों भी पात्र व्यावहारिक स्तर पर अपना जीवन सफल बनाने का प्रयत्न करते हैं। अनिल जामात होकर भी अपनी पत्नी के माता-पिता को अपने माता-पिता मानकर उनके दुःख दर्द में ह्रदय से सम्मिलित होता है। रमेश के अंतिम क्रिया कर्म में अच्छा योगदान निभाता है। पूरे परिवार का वह निर्देशक लगता है। समझदार और व्यवहार कुशलता से रमेश की हत्या के प्रसंग को निभाता है।

इसके साथ-साथ स्त्री 1, 2, पुरुष 1, 2 आदि के माध्यम से पड़ोसी धर्म पर नाटककार ने चिंतन किया है और इन पात्रों का नाम निर्देशन करके उनका साधाणीकरण किया है। नाटक का पात्र खन्ना रमेश का दोस्त है लेकिन अनिल की धारणा है कि रमेश के कत्ल के पीछे खन्ना का हाथ है, इसलिए खन्ना के साथ वह दूर से ही बर्ताव करती है।

इस नाटक की पात्र वैजयंति एक महानगरीय अवैध यौन-संबंध रखनेवाली और रमेश के अपने जाल में अटकानेवाली औरत है। वह रमेश की मृत्यु के बाद बनारसीदास की बहू बनकर रहना चाहती है परंतु रमेश का पूरा परिवार उसका विरोध करता है, फिर भी बनारसीदास को उसके पास की संपत्ति का पता चलते ही वह उसे बहू बनाने के लिए तैयारी दर्शाता है। स्पष्ट है कि इस नाटक के सभी पात्र पारिवारिक कटघरे में रहकर बाहर की विसंगत बातों पर विचार करते हैं।

'निर्णय रूका हुआ' में कुल आठ पात्र हैं। ये सभी पात्र मध्य्य वर्ग से संबंधित दिल्ली शहर के निवासी हैं। इस नाटक में प्रमुख पात्र शर्माजी हैं जो मध्यविन परिवार की इमानदारी और चिंतनशीलता के वाहक हैं। वे गैर मार्ग से सस्ती लकड़ी की अपेक्षा प्रशस्त मार्ग से चलकर महँगी लकड़ी खरीदना चाहते हैं। सावित्री शर्माजी की पत्नी है जो भारतीय नारी परंपरा की वाहक लगती है। घर बांधते समय पति के सामने उभरी हुई समस्या का हल ढूँढ़ने का वह प्रयत्न करती है। घर बांधने के दौरान परिवार के सभी समस्याओं की संवेदनशीलता का विचार भी करती है। गीता शर्मा की बेटी है जो घर बांधने के दौरान टी. वी. की मांग करके अपनी जिद्द का परिचय देती है। उसके घर की समस्या का कोई लेना देना नहीं है।

सतीश -

शर्मा का बेटा जो अपना व्यापार बढ़ाने की धून में पिताजी को कार बेचने से मना करता है और व्यापार की आवश्यकता के सामने वह मकान की आवश्यकता को गोठा मानता है। उस नाटक का पात्र निकुंज जिद्दी हट्टी है जो घर की खातिर न करते हुए कश्मीर ट्रीप के लिए पिताजी के पास पैसे की मांग करता है। श्रीवास्तव एक आर्किटेक्चर है जो मकान को लकड़ी की सहायता से आलिशान बंगले का रूप देना चाहता है, परंतु लकड़ी की मँहगाई के कारण उसके इस सुझाव में दिक्कते आते हैं।

वर्मा -

नाटक का एक ऐसा पात्र जो पत्रकार होने के नाते राजनीतिज्ञ अधिकारी, अफसरों से संबंधित होने से इन सभी की सहायता से अपना उल्लू सीधा करता है। वर्मा शर्माजी को लकड़ी सस्ते भाव में देने का आमिश दिखाकर उसे चक्रव्यूह में डालना चाहता है।

माहेश्वरी -

वर्माजी का दोस्त और लकड़ी का व्यापारी है जो अपना उल्लू सीधा करने के लिए शर्माजी को गैर मार्ग का अवलंब करने को बाध्य करता है।

संक्षेप में आलोच्य नाटक के सभी पात्र विभिन्न परिवेश में, विभिन्न माहौल में पनप रहे हैं और अपनी अपनी प्रकृति और प्रवृत्ति के कारण नाटक में अपने व्यक्तित्व को साकार करते हैं। पात्र और चरित्र चित्रण की दृष्टि से ये नाटक सफल है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, साहित्य में पात्र : प्रतिमान और परिवेश, पृ. 3
2. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 8
3. वही, पृ. 9
4. वही, पृ. 18
5. वही, पृ. 43
6. वही, पृ. 16
7. वही, पृ. 18
8. वही, पृ. 37
9. वही, पृ. 50
10. वही, पृ. 8
11. वही, पृ. 9
12. वही, पृ. 36
13. वही, पृ. 20
14. वही, पृ. 20
15. वही, पृ. 38
16. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 55
17. वही, पृ. 76
18. वही, पृ. 90
19. वही, पृ. 66
20. वही, पृ. 84
21. वही, पृ. 87
22. वही, पृ. 65
23. वही, पृ. 88
24. वही, पृ. 92

25. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 107
26. वही, पृ. 110
27. वही, पृ. 135
28. वही, पृ. 113
29. वही, पृ. 113
30. वही, पृ. 118
31. वही, पृ. 109
32. वही, पृ. 106
33. वही, पृ. 129
34. वही, पृ. 156